

Uttar Pradesh Universities Act 1973

APPENDIX 'C'

(See STATUTES 16.02, 16.27, 17.03 AND 17.10)

CODE OF CONDUCT FOR TEACHERS

WHEREAS a teacher, conscious of his responsibilities and the trust placed in him to mould the character of the youth and to advance knowledge, intellectual freedom and social progress, is expected to realise that he can fulfil the role of moral leadership more by example than by precept through a spirit of dedication, moral integrity and purity in thought, word, and deed;

Now THEREFORE, in keeping with the dignity of his calling, this code of conduct is hereby laid down to be truly and faithfully observed :

1. Every teacher shall perform his academic duties with absolute integrity and devotion.
 2. No teacher shall show any partiality or bias in the assessment of the students nor shall he practice victimisation against them.
 3. No teacher shall incite one student against another or against his colleagues or the Alma Mater.
 4. No teacher shall discriminate against any pupil on grounds of caste, creed, sect, religion, sex, nationality or language. He shall also discourage such tendencies amongst his colleagues, subordinates and students, and shall not try to use the above considerations for the improvement of his own prospects.
 5. No teacher shall refuse to carry out the decisions of the appropriate bodies and functionaries of the University or the college, as the case may be.
 6. No teacher shall divulge any confidential information relating to the affairs of the University or college, as the case may be, to any person not authorised in respect thereof.
-

5- अध्यापकों के लिए आचार संहिता

संख्या - 3645/15-84(11)-14(22)/82

प्रेषक,

डा० एस० एस० खन्ना,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

शिक्षा निदेशक,
(उच्च शिक्षा),
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

शिक्षा (11) अनुभाग

लखनऊ : दिनांक 30 नवम्बर, 1984

विषय : महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा शिक्षण तथा परीक्षा कार्य का किया जाना।

महोदय,

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि प्रदेश के महाविद्यालयों के कतिपय शिक्षकों द्वारा समय से शिक्षण कार्य न करने तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में सहयोग न देने की शिकायतें शासन को प्राप्त होती रही हैं। ऐसा करने से परीक्षाओं में व्यवधान होता है और सत्र के नियमितीकरण में कठिनाई उत्पन्न होती है। अतः शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले कार्य के सम्बन्ध में विचारोपरान्त शासन ने यह निर्णय लिया है कि :-

- (क) महाविद्यालय का प्रत्येक अध्यापक अपने शैक्षिक कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता से करेगा। वह कक्षा शिक्षण कार्य, परीक्षा कार्य तथा पाठ्येत्तर कार्यों के सम्बन्ध में प्राचार्य/विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त आदेशों का पालन करेगा और अपने कर्तव्य पालन में समय की नियमितता बरतेगा।
- (ख) कोई भी प्राध्यापक किसी ऐसी पुस्तक जो कुंजी/गाइड आदि कही जाती है, के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग नहीं देगा।
- (ग) कोई भी प्राध्यापक जो पूर्णकालिक पद पर नियुक्त है, कोई अंशकालिक (पार्ट टाइम) कार्य जिसमें न्यायालयों में विधि की प्रैक्टिस करना, प्राइवेट कोचिंग संस्था चलाना अथवा ऐसी किसी संस्था में शिक्षण कार्य करना सम्मिलित है, नहीं करेगा। वह किसी ऐसे व्यवसाय अथवा कार्य में जिससे उसके कर्तव्य पालन में बाधा होती है, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग नहीं करेगा। विधि विभाग के दिनांक 16 अगस्त, 1978 से पूर्व नियुक्त ऐसे प्रवक्ता जिन्हें न्यायालय में प्रैक्टिस करने की अनुमति दी गयी थी उक्त सुविधा का उपभोग पूर्ववत् करते रहेंगे।

(2) मुझे यह भी कहने का निदेश हुआ है कि उपर्युक्त उपबन्धों का उल्लंघन परिनियमों के अन्तर्गत "कर्तव्य की जान बूझ कर उपेक्षा" समझा जायेगा और ऐसे प्राध्यापक को परिनियमों में की गई व्यवस्था के अनुसार दण्ड दिया जा सकेगा।

कृपया सभी सम्बन्धित अधिकारियों/कर्मचारियों को तदनुसार सूचित कर दें तथा कृत कार्यवाही से शासन को तत्काल अवगत करायें।

भवदीय,
एस0 एस0 खन्ना
संयुक्त सचिव।

संख्या 3645(1)/15-84(11) तददिनांक

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. उत्तर प्रदेश के समस्त मण्डलीय उप शिक्षा निदेशक।
2. उत्तर प्रदेश के समस्त जिला विद्यालय निरीक्षक।
3. उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों के कुलपति।

आज्ञा से,
एस0 एस0 खन्ना
संयुक्त सचिव।

संख्या - 1974/15(11)/95-14(2)/95

प्रेषक,

श्री एम0 रामचन्द्रन,
सचिव,
उच्च शिक्षा विभाग,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

- (1) कुलपति,
समस्त राज्य विश्वविद्यालय,
उत्तर प्रदेश।
- (2) शिक्षा निदेशक,
उच्च शिक्षा, उ0प्र0,
इलाहाबाद।

शिक्षा (11) अनुभाग

लखनऊ : दिनांक 24 मई, 1995

विषय : विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के अध्यापकों के लिए निर्धारित आचार संहिता एवं कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या का अनुपालन।

महोदय,

उच्च शिक्षा को सदैव ही शैक्षिक उन्नयन तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। शिक्षा का निरन्तर गिरता हुआ स्तर चिन्ता का विषय है। अतः जो शैक्षिक स्वतंत्रता प्रदान की गयी है वह जिम्मेदारी विहीन नहीं हो सकती है। शासन ने शिक्षकों के वेतन तथा सेवा संबंधी मामलों में पर्याप्त सुधार कर दिया है। अतः हमारे अध्यापकों को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निर्वहन करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 एवं कार्ययोजना 1992 में निर्धारित मार्गदर्शक सिद्धान्तों के अनुरूप अध्यापकों के लिए आचार संहिता तथा कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या तैयार कर सभी विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों को अनुपालन हेतु वर्ष 1989 में प्रेषित कर दी थी। शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा ने भी उपर्युक्त विषयक प्रपत्र वर्ष 1989 में सभी महाविद्यालयों के प्राचार्यों को उसका अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु भेजा था।

2- आचार संहिता में मुख्य रूप से अध्यापकों से यह अपेक्षा की गयी है कि वे निरन्तर अध्ययन एवं शोध के द्वारा अपनी शैक्षिक उपलब्धियों का विकास, शैक्षिक कर्तव्यों का पालन पूर्णनिष्ठा एवं कर्तव्य परायणता से, प्रवेश, परीक्षा संचालन, निरीक्षण, परिप्रेक्षण, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, पाठ्य एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों में, सहयोग, अन्य रोजगार, प्राइवेट ट्यूशन एवं कोचिंग नहीं करेगा इत्यादि।

3- कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या में अध्यापक द्वारा सत्र में सम्पन्न किये गये कार्य कलापों का विवरण एवं उपलब्धियों तथा विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के कार्यों में उसकी भूमिका/योगदान क्या रहा है, का लेखा-जोखा है।

4- सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों/महाविद्यालय के प्राचार्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि आचार संहिता का पालन एवं कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या का विवरण/अभिलेख रख रहे होंगे। महाविद्यालयों के प्राचार्य प्रत्येक अध्यापक

के संबंध में उपर्युक्त विवरण निर्धारित प्रपत्र पर शिक्षा निदेशक, उच्च शिक्षा तथा संबंधित क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी को यथास्थिति 31 मार्च (1 अप्रैल से 31 मार्च तक) की प्रगति प्रतिवर्ष 30 अप्रैल तक उपलब्ध करायेंगे।

5- कुलपति/महाविद्यालय के प्राचार्य अपनी आख्या में यह स्पष्ट उल्लेख करेंगे कि संबंधित अध्यापक ने आचार संहिता का पालन किया अथवा नहीं तथा कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या संतोषजनक/असंतोषजनक जां भी स्थिति हो, का उल्लेख भी करेंगे।

6- शासनादेश संख्या 91/जी0आई0/15-11-88-14(5)/87 दिनांक 7 जनवरी, 1989 में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि अध्यापकों को वरिष्ठ/चयन वेतनमान की अनुमन्यता के लिए अविच्छिन्न रूप से कार्य निष्पादन मूल्यांकन आख्या का संतोषजनक होना अनिवार्य है। अतः भविष्य में उपर्युक्त अभिलेख उपलब्ध न रहने की स्थिति में वरिष्ठ/चयनवेतनमान की अनुमन्यता के लिए संबंधित अध्यापक के प्रकरण पर विचार नहीं किया जायेगा।

भवदीय,
एम0 रामचन्द्रन,
सचिव।

पृष्ठांकन संख्या-1974(1)/15(11)/95-14(2)/95 तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नांकित को आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने हेतु प्रेषित :-

1. प्रमुख सचिव, श्री राज्यपाल को सूचनार्थ।
2. समस्त क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
3. प्राचार्य, समस्त शासकीय/अशासकीय महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश।
4. उच्च शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारी।
5. निजी सचिव, सचिव (उच्च शिक्षा)।

आज्ञा से,
एम0 रामचन्द्रन,
सचिव।

UGC REGULATIONS ON MINIMUM QUALIFICATIONS FOR APPOINTMENT OF TEACHERS AND OTHER ACADEMIC STAFF IN UNIVERSITIES AND COLLEGES AND MEASURES FOR THE MAINTENANCE OF STANDARDS IN HIGHER EDUCATION, 2018

Code of Professional Ethics

I. Teachers and their Responsibilities:

Whoever adopts teaching as a profession assumes the obligation to conduct himself / herself in accordance with

the ideal of the profession. A teacher is constantly under the scrutiny of his students and the society at large.

Therefore, every teacher should see that there is no incompatibility between his precepts and practice. The

national ideals of education which have already been set forth and which he/she should seek to inculcate among

students must be his/her own ideals. The profession further requires that the teacher should be calm, patient and

communicative by temperament and amiable in disposition.

Teacher should:

- (i) Adhere to a responsible pattern of conduct and demeanor expected of them by the community;
- (ii) Manage their private affairs in a manner consistent with the dignity of the profession;
- (iii) Seek to make professional growth continuous through study and research;
- (iv) Express free and frank opinion by participation at professional meetings, seminars, conferences etc.,
towards the contribution of knowledge;
- (v) Maintain active membership of professional organisations and strive to improve education and profession through them;
- (vi) Perform their duties in the form of teaching, tutorials, practicals, seminars and research work, conscientiously and with dedication;
- (vii) Discourage and not indulge in plagiarism and other non ethical behaviour in teaching and research;
- (viii) Abide by the Act, Statute and Ordinance of the University and to respect its ideals, vision, mission,
cultural practices and tradition;
- (ix) Co-operate and assist in carrying out the functions relating to the educational responsibilities of the
college and the university, such as: assisting in appraising applications for admission, advising and counselling students as well as assisting the conduct of university and college examinations, including supervision, invigilation and evaluation; and
- (x) Participate in extension, co-curricular and extra-curricular activities, including the community service.

II. Teachers and Students

Teachers should:

- (i) Respect the rights and dignity of the student in expressing his/her opinion;
- (ii) Deal justly and impartially with students regardless of their religion, caste, gender, political, economic, social and physical characteristics;
- (iii) Recognise the difference in aptitude and capabilities among students and strive to meet their individual
needs;
- (iv) Encourage students to improve their attainments, develop their personalities and at the same time contribute to community welfare;

- (v) Inculcate among students scientific temper, spirit of inquiry and ideals of democracy, patriotism, social justice, environmental protection and peace;
- (vi) Treat the students with dignity and not behave in a vindictive manner towards any of them for any reason;
- (vii) Pay attention to only the attainment of the student in the assessment of merit;
- (viii) Make themselves available to the students even beyond their class hours and help and guide students without any remuneration or reward;
- (ix) Aid students to develop an understanding of our national heritage and national goals; and
- (x) Refrain from inciting students against other students, colleagues or administration.

III. Teachers and Colleagues

Teachers should:

- (i) Treat other members of the profession in the same manner as they themselves wish to be treated;
- (ii) Speak respectfully of other teachers and render assistance for professional betterment;
- (iii) Refrain from making unsubstantiated allegations against colleagues to higher authorities; and
- (iv) Refrain from allowing considerations of caste, creed, religion, race or sex in their professional endeavour.

IV. Teachers and Authorities :

Teachers should:

- (i) Discharge their professional responsibilities according to the existing rules and adhere to procedures and methods consistent with their profession in initiating steps through their own institutional bodies and / or professional organisations for change of any such rule detrimental to the professional interest;
- (ii) Refrain from undertaking any other employment and commitment, including private tuitions and coaching classes which are likely to interfere with their professional responsibilities;
- (iii) Co-operate in the formulation of policies of the institution by accepting various offices and discharge responsibilities which such offices may demand;
- (iv) Co-operate through their organisations in the formulation of policies of the other institutions and accept offices;
- (v) Co-operate with the authorities for the betterment of the institutions keeping in view the interest and in conformity with the dignity of the profession;
- (vi) Adhere to the terms of contract;
- (vii) Give and expect due notice before a change of position takes place; and
- (viii) Refrain from availing themselves of leave except on unavoidable grounds and as far as practicable with prior intimation, keeping in view their particular responsibility for completion of academic schedule.

V. Teachers and Non-Teaching Staff :

Teachers should :

- (i) Treat the non-teaching staff as colleagues and equal partners in a cooperative undertaking, within every educational institution;
- (ii) Help in the functioning of joint-staff councils covering both the teachers and the non-teaching staff.

VI. Teachers and Guardians

Teachers should:

- (i) Try to see through teachers' bodies and organisations, that institutions maintain contact with the guardians, their students, send reports of their performance to the guardians whenever necessary and meet the guardians in meetings convened for the purpose for mutual exchange of ideas and for the

benefit of the institution.

VII. Teachers and Society

Teachers should:

- (i) Recognise that education is a public service and strive to keep the public informed of the educational programmes which are being provided;
- (ii) Work to improve education in the community and strengthen the community's moral and intellectual life ;
- (iii) Be aware of social problems and take part in such activities as would be conducive to the progress of society and hence the country as a whole;
- (iv) Perform the duties of citizenship, participate in community activities and shoulder responsibilities of public offices;
- (v) Refrain from taking part in or subscribing to or assisting in any way activities, which tend to promote feeling of hatred or enmity among different communities, religions or linguistic groups but actively work for national integration.